8

यीशु की कलीसिया: संगठन

बहुत से लोगों के लिए यह कम महत्व की बात है कि कलीसिया का संगठन कैसा होना चाहिए। फिर भी संगठन एक व्यापक विषय है। कलीसिया का संगठन शरीर के अंगों के समान है। एक अंग के विकृत हो जाने से सम्पूर्ण देह विकलांग हो जाएगी।

यीशु, सिर है

बहुत सी साम्प्रदायिक कलीसियाओं के सांसारिक सिर (हैड) और सांसारिक मुख्यालय (हैडक्वार्टर्स) हैं, परन्तु यीशु की कलीसिया का केवल एक ही सिर था (और है): स्वयं यीशु। कलीसिया का मुख्यालय स्वर्ग में है, जहां यीशु है। प्रेरित पौलुस ने कहा कि परमेश्वर ने ''सब कुछ उसके पांवों तले कर दिया और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे दिया'' (इफिसियों 1:22; कुलुस्सियों 1:18 भी देखिए)। यीशु ने अपने चेलों को बताया कि ''स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है'' (मत्ती 28:18)।

कलीसिया के सांसारिक हैडर्स अथवा मुख्यालयों की बात बाइबल में नहीं मिलती। न ही उसमें अधिकांश साम्प्रदायिक कलीसियाओं के विस्तृत संगठनात्मक प्रबन्धों का उल्लेख है। नये नियम के दिनों में कलीसिया के साथ कोई भी ज़िला-वार, राष्ट्रीय या अंतरराष्ट्रीय संगठन जुड़ा हुआ नहीं था। स्थानीय मण्डली से बड़ा कोई भी संगठनात्मक ढांचा नहीं था।

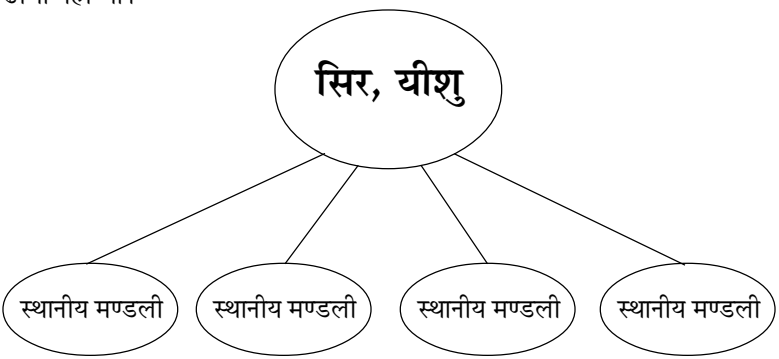

ऊपर दिए गए चित्र में ''सिर, यीशु'' के नीचे गोलाकारों में स्थानीय मण्डलियों को दर्शाया गया है। प्रत्येक चित्र में हर मण्डली को एक दूसरे से स्वतन्त्र दिखाया गया है। स्थानीय मण्डलियां आपस में प्रेम से जुड़ी होती थीं। वे एक दूसरे की सहायता करती थीं (प्रेरितों 11:28-30; रोमियों 15:25, 26), परन्तु उनमें कोई भी संगठनात्मक बन्धन नहीं था।

इस प्रबन्ध को कई बार ''स्थानीय स्वायत्तता'' कहा जाता है। यूनानी शब्द की तरह ''स्वायत्तता'' का अर्थ है ''स्वयं शासित।'' प्रभु की कलीसिया की हर स्थानीय मण्डली पूरी तरह से स्वयं शासित है, अर्थात वह अपना प्रबन्ध स्वयं करती है और केवल यीशु के अधीन है।

कई लोगों को ऐसा लगता है कि यह सरल प्रबन्ध आज के जटिल संसार में काम नहीं करेगा। वे ज़िद करते हैं कि कलीसिया के कार्य को पूरा करने के लिए अतिरिक्त संगठनात्मक ''प्रबन्धन'' की आवश्यकता है। तथापि, मैं प्रमाणित कर सकता हूं कि प्रभु का प्रबन्ध पर्याप्त है। मैंने किसी मानव-निर्मित संगठन के बिना ऑस्ट्रेलिया में दस साल तक मिशनरी के रूप में कार्य किया: मुझे मिडवैस्ट सिटी, ओक्लाहोमा की ईस्ट साइड चर्च ऑफ़ क्राइस्ट सपोर्ट करती थी। मसीह की अन्य कलीसियाएं आवश्यक आर्थिक सहायता तो करती थीं परन्तु मुझे किसी मिशनरी सोसायटी की आवश्यकता नहीं पड़ी।

स्थानीय मण्डली

नये नियम में, कलीसिया की एकमात्र संगठनात्मक इकाई स्थानीय मण्डली है। इस पाठ के शेष भाग में हम अपना ध्यान इस पर केन्द्रित रखेंगे कि बाइबल के दिनों में स्थानीय मण्डलियां किस प्रकार संगठित होती थीं। पौलुस ने फिलिप्पी में पूरी तरह से संगठित कलीसिया[1] को लिखते हुए अपना पत्र इस प्रकार से आरम्भ किया: ''मसीह के दास पौलुस और तीमुथियुस की ओर से सब पवित्र लोगों के नाम, जो मसीह यीशु में होकर फिलिप्पी में रहते हैं, अध्यक्षों[2] और सेवकों समेत'' (फिलिप्पियों 1:1)। इस आयत में चार समूहों का उल्लेख किया गया है: पौलुस और तीमुथियुस सुसमाचार प्रचारक अर्थात इवैंजलिस्ट थे। उन्होंने फिलिप्पी में ''पवित्र लोगों'' को सम्बोधित किया, यह शब्द सामान्य तौर पर कलीसिया के सदस्यों के लिए था।[3] पवित्र लोगों में दो विशेष समूह थे, जिन्हें पौलुस ने ''अध्यक्ष'' और ''सेवक'' कहा है। यह रेखाचित्र दर्शाता है कि पूरी तरह से संगठित एक मण्डली में वे चार समूह किस प्रकार से ठीक बैठते हैं:

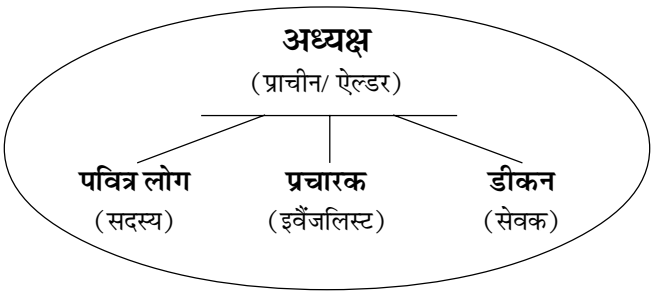

अध्यक्ष: प्राचीन/ऐल्डर्ज़

मण्डली के अगुओं को ''प्राचीन (ऐल्डर्ज़)'' कहा जाता है। इस ''ओहदे''[4] में यह सर्वाधिक प्रचलित पदनाम है (प्रेरितों 11:30; 14:23; 15:2; 20:17)। ''प्राचीन/ऐल्डर्ज़'' के लिए यूनानी शब्द *presbuteros* है। *Presbuteros* का अर्थ है ''बूढ़ा आदमी''[5]; परन्तु कलीसिया के अगुओं के सम्बन्ध में, आयु के साथ परिपक्वता पर भी ज़ोर दिया गया है। प्राचीन (Elders) परिपक्व निर्णय लेने के योग्य होने चाहिए।

ऐल्डरों को ''अध्यक्षों'' के तौर पर भी जाना जाता था। पौलुस ने तीतुस को लिखते हुए शब्द ''प्राचीनों/ऐल्डर्ज़'' और ''अध्यक्षों/बिशपों'' को एक दूसरे के स्थान पर प्रयुक्त किया:

> मैं इसलिए तुझे क्रेते में छोड़ आया था, कि तू शेष रही हुई बातों को सुधारे, और मेरी आज्ञा के अनुसार नगर-नगर प्राचीनों को नियुक्त करे। जो निर्दोष और एक ही पत्नी के पति हों, जिनके लड़के बाले विश्वासी हों, और जिन्हें लुचपन और निरंकुशता का दोष नहीं। क्योंकि *अध्यक्ष* [हिन्दी बाइबल में नीचे टिप्पणी में ''बिशप'' भी दिया गया है] को परमेश्वर का भण्डारी होने के कारण निर्दोष होना चाहिए ... (तीतुस 1:5-7)।

सुपरिचित ''बिशप'' शब्द यूनानी के एक मिश्रित शब्द *एपीस्कोपोस,* से निकला है जिसका अर्थ (जैसा कि पहले संकेत दिया गया था) ''अध्यक्ष (overseer)'' है। पौलुस ने प्राचीनों को बताया कि परमेश्वर ने उन्हें ''अध्यक्ष'' ठहराया था (प्रेरितों 20:17, 28)। पतरस ने प्राचीनों को ''रखवाली'' करने का निर्देश दिया था (1 पतरस 5:1, 2)। ''अध्यक्ष'' (''बिशप'') शब्द प्राचीनों की ज़िम्मेदारी पर ज़ोर देता है: वे मण्डली से जुड़ी हुई सभी बातों में अध्यक्षता करते हैं।[6]

प्राचीनों/अध्यक्षों को ''रखवाले (पास्टर्ज़)'' भी कहा जाता था। यह शब्द इफिसियों 4 में संज्ञा के रूप में मिलता है: ''और उसने कितनों को प्रेरित नियुक्त करके, और कितनों को भविष्यवक्ता नियुक्त करके, और कितनों को सुसमाचार सुनाने वाले नियुक्त करके, और कितनों को *रखवाले* और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया। जिससे पवित्र लोग सिद्ध हो जाएं ...'' (इफिसियों 4:11, 12)। ''पास्टर'' एक लातीनी शब्द है जिसे ''चरवाहे'' (*पोयमैन*) के लिए यूनानी शब्द के अनुवाद के लिए इस्तेमाल किया जाता है। इस शब्द का क्रिया रूप प्रेरितों 20 में मिलता है, जहां प्राचीनों/अध्यक्षों को ''परमेश्वर की कलीसिया की *रखवाली*'' करने के लिए कहा गया था (प्रेरितों 20:28)। इसका क्रिया रूप 1 पतरस 5 में भी मिलता है, जहां प्राचीनों/अध्यक्षों को ''परमेश्वर के उस झुंड की जो [उनके] बीच में है, *रखवाली*'' करने के लिए कहा गया (आयत 2)। प्रेरितों 20 और 1 पतरस 5 दोनों ही इन तीनों शब्दों को अदल-बदल कर इस्तेमाल करते हैं।

प्राचीन (ऐल्डर) = अध्यक्ष (बिशप)= रखवाले (पास्टर)/चरवाहे

''पास्टर'' अथवा ''चरवाहा'' प्राचीनों के काम की व्याख्या है। जिस प्रकार कर्तव्यनिष्ठ चरवाहे अपने झुंडों की रखवाली और देखभाल करते हैं वैसे ही ऐल्डरों के लिए स्थानीय मण्डली की रखवाली और देखभाल करनी आवश्यक है। कलीसिया के अगुओं के सम्बन्ध में, इब्रानियों 13:17 कहता है, ''वे उनकी नाईं तुम्हारे प्राणों के लिए जागते रहते, जिन्हें लेखा देना पड़ेगा।'' ऐल्डर होने के लिए यह ज़िम्मेदारी विस्मयकारी है!

आज, प्रचारकों को आमतौर पर ''पास्टर'' कहा जाता है परन्तु नये नियम के दिनों में प्रचारक मण्डली के ''पास्टर'' को नहीं कहा जाता था। ''पास्टर'' शब्द प्राचीनों के लिए था, न कि उनके लिए जो प्रचारक थे।[7]

मूल नये नियम में मण्डली में ''प्राचीनों'' के विषय में लिखते समय हमेशा इस बहुवचन शब्द का प्रयोग हुआ है (प्रेरितों 11:30; 14:23; 15:2; 16:4; 20:17; 21:18; 1 तीमुथियुस 5:17; तीतुस 1:5; याकूब 5:14; 1 परतस 5:1)। वहां हमें कभी केवल एक ऐल्डर (या एकपास्टर) के बारे में पढ़ने को नहीं मिलेगा जो एक मण्डली की रखवाली करता हो।

कुछ धार्मिक संगठनों में ''बिशप'' हैं जो एक क्षेत्र पर नियन्त्रण रखते हैं, जिसमें बहुत सी मण्डलियां होती हैं। स्थानीय स्वायत्तता का सिद्धांत याद रखिए। वचन के अनुसार, प्राचीनों का एक समूह केवल उस स्थानीय मण्डली की अध्यक्षता कर सकता है जिसके वे स्वयं सदस्य हैं। पतरस ने प्राचीनों को बताया ''कि परमेश्वर के उस झुंड की जो *तुम्हारे बीच में है*, रखवाली करो'' (1 पतरस 5:2), न कि ''उन सभी झुंडों की जो सैकड़ों मील के घेरे में आते हैं।''

प्राचीनों/अध्यक्षों/रखवालों अर्थात ऐल्डरों/बिशपों/पास्टरों के लिए योग्यताएं 1 तीमुथियुस 3:1-7 और तीतुस 1:5-9 में दी गई हैं। थोड़ी देर के लिए आप इन्हें पढ़ें। इन योग्यताओं के अनुसार केवल भक्त मसीही पति और पिता ही प्राचीनों के रूप में सेवा कर सकते हैं। कुंवारे पुरुष योग्य नहीं हैं; नि:संतान पुरुष योग्य नहीं हैं; स्त्रियां योग्य नहीं हैं; आत्मिक तौर पर परिपक्व और उचित निर्णय लेने में असमर्थ पुरुष अयोग्य हैं।

प्रत्येक मण्डली को अपने प्राचीनों का चयन स्वयं करना होता है। आत्मा की प्रेरणा से दी गई योग्यताओं के आधार पर चयन उन्होंने ही करना है।[8]

सेवक: डीकन

फिलिप्पियों 1:1 में पौलुस ने ''अध्यक्षों *और सेवकों*'' को सम्बोधित किया। ''डीकन'' यूनानी भाषा से लिया शब्द है, जिसका अर्थ है ''सेवक।''

डीकन=सेवक

डीकनों को ''ऐल्डरों के दायें हाथ'' माना जा सकता है। पहले ''डीकनों'' का चयन मण्डली की भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए किया गया था ताकि अगुवे

अपने आपको उस काम में लगा सकें जो परमेश्वर चाहता था कि वे करें (देखिए प्रेरितों 6:1-6)।[9]

डीकनों के पास अपने आप में कोई अधिकार नहीं हैं।[10] एकमात्र अधिकार जो उनके पास है, वह वे ज़िम्मेदारियां हैं जो उन्हें प्राचीनों की ओर से प्राप्त होती हैं।

डीकनों की योग्यताएं 1 तीमुथियुस 3:8-13 में मिलती हैं। डीकनों का चयन उनकी योग्यता के आधार पर करना मण्डली की ज़िम्मेदारी है (देखिए प्रेरितों 6:3, 5)।

सुसमाचार प्रचारक: इवैंजलिस्ट

आरम्भिक कलीसिया में प्रचारकों के तीन पदनाम थे। पहला, उन्हें ''प्रचारक'' कहा जाता था (रोमियों 10:14; 1 तीमुथियुस 2:7; 2 तीमुथियुस 1:11) अथवा वे जो ''प्रचार करते हैं'' (1 कुरिन्थियों 1:23)। यूनानी भाषा में ''प्रचारक'' के लिए शब्द ''अग्रगामी दूत'' यूनानी शब्द पर्याय है। जैसे एक राजा के लिए एक राजदूत उसके घोषणा-पत्रों की घोषणा करता था, उसी प्रकार सुसमाचार प्रचारक राजा यीशु के भी दूत थे।[11]

प्रचारकों को कई बार ''सेवक'' कहा जाता था (प्रेरितों 26:16; रोमियों 15:16; इफिसियों 3:7; 6:21) अथवा वे जिन्हें ''सेवा करने का कार्य'' मिला था (प्रेरितों 6:4; 2 तीमुथियुस 4:5)। ''सेवा'' शब्द उसी यूनानी शब्द से अनुवादित हुआ है जिससे ''डीकन'' और उसका साधारण अर्थ है ''सेवक।'' हर एक मसीही एक सेवक है (अथवा होना चाहिए) अर्थात, हर एक मसीही के पास सेवा या सेवा का कोई क्षेत्र होना चाहिए (इफिसियों 4:12; इब्रानियों 6:10; 1 पतरस 4:10, 11)। इसलिए प्रचारक मण्डली का अकेला ''सेवक'' नहीं है। जब ''सेवक'' शब्द प्रचारक के लिए लागू होता है तो इस शब्द में यह गुण होना अच्छा है: ''वह वचन का सेवक है'' (देखिए प्रेरितों 6:4) अथवा ''उसकी सेवकाई प्रचार करना है।''

नये नियम में एक प्रचारक का आधिकारिक पदनाम ''सुसमाचार प्रचारक'' अर्थात इवैंजलिस्ट था (प्रेरितों 21:8; इफिसियों 4:11; 2 तीमुथियुस 4:5)।[12] ''सुसमाचार प्रचारक,'' शब्द ''सुसमाचार'' के यूनानी शब्द से निकला है और इसका अर्थ है ''जो कोई [यीशु के] शुभ समाचार का प्रचार करता है।''[13] इसके लिए सुपरिचित शब्द इवैंजलिस्ट अंग्रेज़ी भाषा से लिया गया है।

आज, प्रचारक की ज़िम्मेदारी वचन का प्रचार करना और शिक्षा देना है। उसे परमेश्वर के संदेश की घोषणा करने से बढ़कर कोई अधिकार नहीं है।[14]

वर्षों से, मनुष्यों ने प्रचारक को परमेश्वर द्वारा दी गई प्रतिष्ठा से ऊपर उठाना चाहा है। उसे परमेश्वर के वचन के बाहर से उपाधियां दी गई हैं (देखिए मत्ती 23:9)। इनमें से एक उपाधि ''रैवरेण्ड'' है। ''रैवरेण्ड'' शब्द का अर्थ है ''भक्ति के योग्य।''[15] यह शब्द एक बार KJV में, भजन संहिता 111:9 में मिलता है: परमेश्वर के बारे में कहता हुआ भजन लिखने वाला लिखता है, ''... holy and reverend is His name.'' अर्थात ''उसका [परमेश्वर का] नाम पवित्र और भययोग्य है।'' भय के योग्य केवल परमेश्वर ही है। मैं अपने नाम के

साथ ''रैवरेण्ड'' नहीं लगाता क्योंकि मैं परमेश्वर नहीं हूं।

पवित्र लोग (सन्त): अन्य सदस्य

स्थानीय मण्डली में बहुत से अन्य महत्वपूर्ण और विशेष कार्य हैं। उदाहरण के लिए, वचन की सार्वजनिक शिक्षा देने वाले हैं (देखिए इफिसियों 4:11)। तथापि, कुछ देर के लिए मैं कलीसिया के सभी अन्य सदस्यों को शामिल करने के लिए फिलिप्पियों 1:1 के जैसे शब्द ''पवित्र लोगों'' का ही उपयोग करूंगा। *हर एक* सदस्य प्राचीनों के अधीन है और उनके वश में है।[16] इब्रानियों 13:17 कहता है, ''अपने अगुओं की मानो; और उनके अधीन रहो, क्योंकि वे उनकी नाईं तुम्हारे प्राणों के लिए जागते रहते हैं, जिन्हें लेखा देना पड़ेगा, कि वे यह काम आनन्द से करें, न कि ठण्डी सांस ले लेकर, क्योंकि इस दशा में तुम्हें कुछ लाभ नहीं।''

सारांश

यह विचार करते हुए कि आप कहां आराधना और सेवा करेंगे, आपको ऐसे प्रश्न पूछने चाहिए: ''क्या यह मण्डली स्वतन्त्र है या क्या यह किसी सांसारिक हैड अथवा संगठन के प्रति उत्तरदायी है?''; ''क्या यहां मण्डली के प्रचारक को 'पास्टर' कहा जाता है?''; ''क्या वह अपने नाम के साथ वचन के विपरीत कोई उपाधि लगाता है जैसे कि 'रैवरेण्ड' ''?

कलीसिया का संगठन आवश्यक है। यह परमेश्वर की योजना के अनुरूप होना चाहिए।

पाद टिप्पणियां

[1]बाद के एक पाठ में हम देखेंगे कि कलीसिया के अगुओं में परमेश्वर द्वारा दी हुई निश्चित योजनाएं हैं। यदि उपलब्ध पुरुषों में वे योग्यताएं नहीं हैं तो अगुओं की नियुक्ति नहीं की जानी चाहिए। तथापि, यदि ऐसा है तो इस विषय में मण्डली में कुछ कमी है (देखिए तीतुस 1:5)। मण्डलियों में लगातार ऐसे पुरुषों की संख्या बढ़ती रहनी चाहिए जो आत्मा के द्वारा दी हुई योग्यताओं को पूरा करते हों।[2]पुराने अनुवाद में नीचे टिप्पणी में ''बिशप'' है। जैसा कि हम देखेंगे, ''बिशप'' शब्द का अक्षरश: अर्थ है ''अध्यक्ष।''[3]पिछले पाठ पर पुनर्विचार कीजिए।[4]''ओहदे'' शब्द को मैंने उद्धरण चिह्नों में रखा है क्योंकि मैं ज़ोर देना चाहता हूं कि यह *केवल* एक ओहदा ही नहीं, बल्कि एक *काम* है। ऐल्डर होना प्रतिष्ठा की उतनी बड़ी बात नहीं है जितनी कि ज़िम्मेदारी की।[5]कलीसिया के अगुओं के लिए (''ऐल्डर'' और ''डीकन'') शब्दों का उपयोग उन दिनों सामान्य शब्दावली का एक भाग था। इन में से प्रत्येक शब्द नये नियम में सामान्य अर्थ में प्रयोग किया गया है। संदर्भ तय करता है कि शब्द का उपयोग सामान्य अर्थ में किया जा रहा है या कलीसिया के अगुवे के विशेष अर्थ में।[6]कई बार यह कहा जाता है कि ऐल्डर आध्यात्मिक बातों की अध्यक्षता करते हैं और डीकन शारीरिक बातों की निगरानी करते हैं लेकिन यह सत्य नहीं है। ऐल्डर डीकनों को किसी या सभी प्रकार की शारीरिक सेवाओं के लिए लगा सकते हैं, परन्तु फिर भी ऐल्डरों की हर उस बात में ज़िम्मेदारी है जो मण्डली को प्रभावित करती है।[7]यदि एक प्रचारक ऐल्डर की योग्यताओं को पूरा करता है और यदि कलीसिया उसे उस अधिकार में सेवा करने के लिए कहती है, तो वह (ऐल्डरों) प्राचीनों/अध्यक्षों/(पास्टरों) में से *एक* हो सकता है परन्तु वचन के अनुसार वह कभी भी ''*अकेला* पास्टर'' नहीं बन सकता।[8]निर्धारित योग्यताओं के आधार

पर एक मण्डली के द्वारा अगुओं को चुनने के एक उदाहरण के लिए, देखिए प्रेरितों 6:3, 5। [9]मैं शब्द ''डीकनों'' को उद्धरण चिह्नों में रखता हूं क्योंकि कुछ आपत्तियां हैं कि वे ''आधिकारिक'' डीकन थे भी या नहीं। कुछ भी हो वे डीकनों का काम करते थे और अनुवादित शब्द ''डीकन'' अथवा सेवक का क्रिया रूप प्रेरितों 6:2 में इस्तेमाल किया गया है। [10]नया नियम यह नहीं सिखाता कि ''डीकनों का एक बोर्ड'' कलीसिया को चलाए।

[11]इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि एक प्रचारक को ''पूर्ण-अवधि'' के लिए माना जाता है या वह कोई और काम करता है और रविवार को प्रचार करता है। उसे प्रचारक ही कहा जाएगा। [12]शब्द ''इवैंजलिस्ट'' का इस बात से कोई लेना-देना नहीं है कि कोई व्यक्ति शुभ समाचार सुनाने के लिए एक जगह से दूसरी जगह जाता है या एक ही जगह पर रहता है। [13]''इवैंजलिस्ट'' का *क्रिया* रूप नये नियम में आम तौर पर मिलता है। अक्षरश, इसका अर्थ है ''शुभ समाचार का प्रचार करना,'' परन्तु सामान्यत: इसका अनुवाद केवल ''प्रचार करना'' किया जाता है (देखिये प्रेरितों 8:35; रोमियों 1:15)। [14]नया नियम ''इवैंजलिस्ट के अधिकार'' की कोई तथाकथित शिक्षा नहीं देता। [15]*द अमेरिकन हैरिटेज डिक्शनरी,* 3रा सं., s.v.''reverend.'' [16]अर्थात, ऐल्डर मण्डली को गुमराह न करते हों तो मण्डली के सदस्यों को चाहिए कि वे ऐल्डर्स के निर्णयों को मानें (प्रेरितों 20:28-31)।